प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 05 सितम्बर। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह में **'संस्कृत एवं संस्कृति'** विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये मुख्य अतिथि अरैल, प्रयाग से पधारे **स्वामी गोपाल जी** ने कहा कि संस्कृत भाषा जीवित होगी तभी भारतीय संस्कृति अक्षुण्य होगी। संस्कृत देववाणी है, भारत की वाणी है, मानवता की वाणी है, करूणा की वाणी है, दया की वाणी है, अहिंसा की वाणी है और फिर ज्ञान–विज्ञान की वाणी है। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने कहा था कि संस्कृत भाषा समस्त ज्ञान तथा विज्ञान का बृहद भण्डार है। इस देश के वासी तब तक प्रथम श्रेणी के वैज्ञानिक नही बन सकते जब तक कि वे संस्कृत मे उपलब्ध प्राचीन भारतीय विज्ञानों का उचित अध्ययन नही कर लेते। वे कहा करते थे संस्कृत भारतीय भाषाओं की जननी है। भारत वह भूमि है जहॉ से ज्ञान और दर्शन की लहरें उठती है। दोनों महन्त जी महाराज भारत को जगद्गुरू के रूप में पुर्नप्रतिष्ठित होना देखना चाहते थे। गोरक्षपीठाधीश्वर द्वय ने अपने जीवन में भारतीय संस्कृति और संस्कृत की रक्षा एवं इसी उद्देश्य से संस्कृति एवं संस्कृत के उत्थान के लिये प्रयत्न करते रहें। गोरक्षपीठाधीश्वर द्वय को उनकी पुण्यतिथि पर हम **'संस्कृति और संस्कृत'** की रक्षा का संकल्प लेकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते है। उन्हे वास्तविक श्रद्धांजलि उनके इन्ही प्रयत्नों को आगे बढ़ाकर ही दी जा सकती है।

मुख्य वक्ता प्रतिष्ठित पत्रकार एवं राज्यसभा के पूर्व सांसद श्री तरुण विजय जी ने कहा कि गोरक्षपीठ भारत के धर्म संस्कृति की रक्षक पीठ है। यह पीठ हमें आनन्दमठ का स्मरण दिलाती है। यह पीठ वन्देमातरम् को जीती है। इस पीठ ने भारतीय संस्कृति, भारतीय धर्म और भारतीय भाषाओं की रक्षा के लिए सदैव नेतृत्व किया है। हमारी भाषा हमारी संस्कृति हमें जीवन जीना सिखाती है। अतः संस्कृति को कर्म–काण्ड से उठाकर राजभाषा बनाना होगा। संस्कृत को रोजगार से जोड़ना होगा। संस्कृत पढ़ने–पढ़ाने वाले परिवारों को पुरस्कृत करना होगा। संस्कृत को ज्ञान, विज्ञान, दुकान, मकान एंव विधान की भाषा बनानी होगी तब भारतीय संस्कृति सुरक्षित होगी, संवर्धित होगी और विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। अपनी भाषा और संस्कृति के बल पर इजराइल और चीन ने दुनिया में अलग–अलग दृष्टि से अपना महत्व बनाया है। हम ज्ञान–विज्ञान, दर्शन एवं जीवन जीने का श्रेष्ठतम् पद्धति के विकास करने वाले पूर्वजों की संतान होकर भी आज स्मृतिहीनता के दौर से गुजर रहे है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे पास दुनिया का प्राचीनतम और श्रेष्ठतम ज्ञान का भण्डार, ग्रन्थ है। भारत ऋषियों–मुनियों और तपस्वियों का देश है। यह नदियों–पर्वतों का देश है। यह आदि संस्कृति और दुनियां की प्राचीनतम भाषा संस्कृत का देश है। हमने छः हजार साल से संस्कृति को संजोकर विस्तृत किया। अपनी ज्ञान परम्परा के ग्रन्थों को संजोकर आजतक रखा हैं, वे सभी ग्रन्थ अथवा यह कहें कि ज्ञान परम्परा संस्कृत भाषा में हैं। यही कारण है कि हमारी संस्कृति और संस्कृत एक दूसरे के पूरक हैं। हमने लिखित और मौखिक दोनो परम्पराओं के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर बनाए रखी हैं। भारत का आदमी अपने ज्ञान को जीता है। इस ज्ञान की अथवा जीवन की भाषा संस्कृत ही हैं। अतः यदि संस्कृत नहीं

रहेगी तो संस्कृति भी हम नहीं बचा सकते। भारतीय संस्कृति की रक्षा की आवश्यक शर्त है संस्कृत भाषा की रक्षा। भारत संस्कृत और संस्कृति को छोड़कर जिन्दा नहीं रह सकता।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं पूर्व कुलपति प्रो0 यू0पी0सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि संस्कृत भारतीय चेतना और सनातन स्रोत की अजस्र धारा है। सनातन संस्कृत का आधार स्तम्भ है। यदि किसी को भारत तथा भारतीयता को समझना है तो संस्कृत की शरण लेनी होगी। संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति एक दूसरे की पूरक है। पश्चिमी अवधारणा के विपरीत भारतीय मनीषियों ने राष्ट्र को एक भू–सांस्कृतिक ईकाई माना है। ऐसे में संस्कृति के बगैर भारत राष्ट्र की कल्पना बेमानी है। भारत राष्ट्र तभी तक जीवित है जब तक भारतीय संस्कृति सुरक्षित है और संस्कृति की सुरक्षा संस्कृत भाषा की रक्षा से ही सम्भव है। विपरीत परिस्थितियों में भी यदि भारत राष्ट्र सुरक्षित रहा तो केवल भारतीय संस्कृति की मौलिक ताकत के कारण।

विशिष्ट वक्ता प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृत विभाग की पूर्व अध्यक्ष प्रो0 विपुला दूबे ने कहा कि भारत की आत्मा संस्कृति है और संस्कृति की आत्मा संस्कृत में बसती है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दू संस्कृति की मजबूत जड़े संस्कृत भाषा में रचित भारतीय मनीषियों की चिन्तन–दर्शन परम्परा के ग्रन्थों में है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अर्थात् पुरूषार्थ चतुष्टय जो भारतीय जीवन पद्धति के प्राण हैं की मूल भावना संस्कृत भाषा में ही है। अतः राष्ट्र की रक्षा, जीवन की रक्षा, धर्म की रक्षा, संस्कृति की रक्षा हेतु संस्कृत की रक्षा आवश्यक है।

जगद्‌गुरू रामानन्दाचार्य स्वामी रामानन्ददास जी महाराज ने कहा कि भारत की दुनिया में दो के ही कारण प्रतिष्ठा है– एक संस्कृति और दूसरी संस्कृत। भारतीय संस्कृति के वाड़गमय मौलिक रूप से संस्कृत भाषा में है। संस्कृत भाषा और उसमें निहित संस्कृत का विस्तार हिमालय से लेकर सागर तक था। पूरब मे तो कम्बोडिया, मलेशिया, इण्डोनेशिया में आज भी किंचित सुरक्षित है किन्तु पश्चिम में उत्पन्न सम्प्रदायों ने संस्कृत को विनष्ट किया। परिणामतः भारतीय संस्कृति समाप्त हो गयी। भारत में आज भी हमारे दैनिक कर्मकाण्डों के कारण कदाचित संस्कृत और संस्कृति सुरक्षित है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **प्रो0 शिवाजी सिंह** ने कहा कि संस्कृत भारतीय संस्कृति की मूल है। भारत में हिन्दू संस्कृति के मूल संस्कृत को ही समाप्त करने का दुष्चक्र चल रहा है। संस्कृत विश्वविद्यालय, महाविद्यालय उपेक्षा के शिकार हैं। अब भारत की राष्ट्रवादी जनता ही संस्कृत भाषा और संस्कृति की रक्षा कर सकती है। श्री गोरक्षनाथ मन्दिर न होता तो इस क्षेत्र में संस्कृत के छात्र ही नही मिलते। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के बाद यदि कहीं संस्कृत के सर्वाधिक विद्यार्थी हैं तो वे गोरखनाथ मन्दिर द्वारा संचालित श्री गोरक्षनाथ संस्कृत महाविद्यालय में है।

समारोह का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी को पुष्पांजलि, वैदिक मंगलाचरण एवं गोरक्षाष्टक पाठ के साथ हुआ। महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर एवं महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज के प्रधानाचार्यो एवं दोनों संस्थाओं के शिक्षकों ने माल्यार्पण के साथ अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह ने किया।

संस्कृति एवं संस्कृत सम्मेलन

पुण्यतिथि समारोह